मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

बहाई समाचारपत्र

वर्ष : 54 अंक 5 | प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख
मई 2018 | बहाई वर्ष : 175

विश्व न्याय मन्दिर

अपने समाज के जीवन में बहाई जो भी योगदान देते हैं उसका लक्ष्य है एकता को बढ़ावा देना; समुदाय–निर्माण सम्बंधी उनका हर प्रयास इसी उद्देश्य के लिए है। कलह से थक चुके लोगों के लिए, 'महानतम नाम' की छाया तले पनप रहे समुदाय इस बात का एक जोरदार उदाहरण प्रस्तुत करते हैं कि एकता से क्या प्राप्त हो सकता है।

–रिज़वान 2017

झारखण्ड में आयोजित गतिविधियाँ

• जमशेदपुर के बहाई भवन में 7 एवं 8 अप्रैल 2018 को राज्य स्तर पर क्लस्टर विकास सहयोगी एवं क्षेत्रीय शिक्षण समितियों की बैठक संपन्न हुई। इस बैठक में परिषद के सदस्य, पडोसी क्लस्टरों के भ्रमण दल के सदस्य और सहायक मंडल सदस्य भी उपस्थित हुए। इस बैठक में 7 क्लस्टरों से 12 मित्रों ने भाग लिया और 4 विकास सहयोगी भी उपस्थित हुए। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य क्लस्टर विकास सहयोगी, समितियों के कार्यों को नजदीकी से समझना, गृह भ्रमण, शिक्षण, प्रार्थना सभाओं की संख्यात्मक और गुणात्मक वृद्धि एवं एक वर्ष का मूल्यांकन एवं आगामी (2018–2019) बची हुई योजना को तैयार करना था। इन तत्वों को समझने के लिए, बैठक में 29 दिसम्बर 2015 के अंशों एवं सहायक मण्डल सदस्यों के सम्मेलन को संबोधित 2016 का अध्ययन (शिक्षण के क्षेत्र में मित्रों की क्षमताओं को उपयोग में लाना) किया गया।



जमशेदपुर में राज्य स्तर की बैठक में उपस्थित मित्रगण



योजना एवं बजट सत्र की बैठक में भाग लेने वाले प्रतिभागी

• जमशेदपुर के बहाई भवन में ही दो–दिवसीय वार्षिक योजना एवं बजट की बैठक सलाहकार श्री दृगपाल सिंह के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुई। इसमें राज्य बहाई परिषद के सदस्य, प्रशिक्षण संस्थान के सदस्य, सहायक मंडल सदस्य, संस्थान संयोजक एवं सहयोगी, स्थानीय आध्यात्मिक सभा के सदस्य,

शेष पृष्ठ 2 पर

इस अंक में

बहाई सम्पदाओं के संवर्धन पर पहली क्षेत्रीय बैठक का आयोजन

बहाई सम्पदाओं के संवर्धन से सम्बन्धित पहली क्षेत्रीय बैठक का आयोजन लखनऊ में किया गया। बैठक का आयोजन सम्पदा और विधि मामलों की राष्ट्रीय समिति द्वारा किया गया, जिसमें उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान और पंजाब की क्षेत्रीय/राज्य सम्पदा समितियों के सदस्य और बहाई सम्पदाओं के केयरटेकरों ने भाग लिया। बैठक में विभिन्न परिषदों और राज्य राजधानियों की स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के सदस्य भी उपस्थित थे। सलाहकार दृगपाल सिंह की उपस्थिति से बैठक गौरवान्वित हुई।



बहाई सम्पदाओं के संवर्धन पर आयोजित पहली क्षेत्रीय बैठक में भाग लेने वाले मित्रगण

बैठक का उद्देश्य मुख्य रूप से क्षेत्रों और स्थानीय लोगों को प्रेरणा देनी थी कि वे अपनी सम्पदाओं की देख–रेख स्वयं करें, स्वामित्व का भाव विकसित करें, बहाई सम्पदाओं के समुचित ढंग से रख–रखाव और उनके संरक्षण का जिम्मा लें और एक ऐसी प्रणाली विकसित करें जिससे ये सारे काम स्वाभाविक रूप से चलते रहें। समय–समय पर बहाई सम्पदाओं का मूल्यांकन तथा वर्तमान सभी बहाई सम्पदाओं की एक सूची तैयार करने के काम पर भी बैठक में चर्चा हुई।

आरम्भ में बहाई सम्पदाओं के सम्वर्धन से सम्बन्धित विश्व न्याय मंदिर का 1 जुलाई, 2012 के संदेश को पढ़ कर मार्ग–निर्देश को समझने की कोशिश की गई और इस बात पर सभी एकमत हुये कि बहाई सम्पदाओं की देख–रेख अत्यन्त सम्मानीय तरीके से, बहाई सम्पदाओं के पवित्र उद्‌देश्य को ध्यान में रख कर किया जाना चाहिये।

अपने क्षेत्र में सभी सम्पदाओं का मूल्यांकन करने के बाद उन्हें विभिन्न वर्गों में विभाजित किया। मसलन, जैसे कि जिन सम्पदाओं का पूरा उपयोग किया जा रहा है और उनके साथ कोई मामला अटका नहीं है; (ए श्रेणी) सम्पदायें जिनके स्वामित्व ग्रहण किये जा चुके हैं और हर प्रकार के कागज़ात उपलब्ध हैं; परन्तु उपयोग में नहीं हैं (बी श्रेणी) सम्पदायें जिनके स्वामित्व से सम्बन्धित दस्तावेज नहीं हैं; सम्पदायें जिनका रख–रखाव अच्छी तरह नहीं हो रहा है (सी श्रेणी) अथवा जिनके हाथ से निकल जाने की आशंका है और सम्पदायें जिनके दस्तावेज पूरे नहीं हैं या उपलब्ध नहीं हो पा रहे हैं (डी श्रेणी)। तथा सम्पदायें जिनके कुछ दस्तावेज उपलब्ध हैं परन्तु वे खोजी नहीं जा पा रही हैं या हाथ से निकल चुकी हैं (ई श्रेणी)। इससे लोगों को हर प्रकार की सम्पदा का मूल्यांकन और उनसे सम्बन्धित कार्य करने में सहायता मिली।

उत्तर प्रदेश के सहार में सहशिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

विश्व न्याय मन्दिर द्वारा मार्गदर्शित प्रपत्र 29 दिसम्बर 2015 के अनुसार सहशिक्षकों की संख्या में बढ़ोत्तरी करके हम नये समुदायसमूहों को प्रथम मील के पत्थर से दूसरे मील के पत्थर तक ले जा सकते हैं। इसी क्रम में उत्तर प्रदेश में सहार बहाई भवन में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 12 से 15 अप्रैल 2018 तक किया गया। इस कार्यक्रम में 35 से 40 मित्रगणों ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज की। सत्र के प्रथम दिन रूही पुस्तक–1 'दिव्य जीवन–एक चिंतन' का अध्ययन शुरू हुआ और इसके बाद रूही पुस्तक–7 का अध्ययन चला। इसके उपरांत अनुप्रेरक और शिक्षकों ने रूही पुस्तक–5 और रूही पुस्तक–3 के महत्वपूर्ण अंशों का अध्ययन किया गया। इसके अलावा, किशोर कार्यक्रम के प्रमुख तत्वों पर चर्चा की गई। अंत में सहायक मण्डल सदस्य ने सभी प्रशिक्षण प्राप्त सहशिक्षकों से उनकी कार्ययोजना के बारे में चर्चा की, तब सभी मित्रों ने अपनी अध्ययनवृत कक्षा शुरू करने की त्रैमासिक योजना बनाई गई।



सहार में आयोजित सहशिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागी

बहाउल्लाह का स्वर्गारोहण

बहाउल्लाह ईश्वर के वह महान अवतार हैं जिनके प्रकट होने की भविष्यवाणी पिछले सभी अवतारों ने की है सभी युगों के दैवी धर्म एक ही दिशा में ले जाते हैं और एक ही लक्ष्य की शिक्षा देते हैं। वे सागर में मिलने वाली अनेक नदियों के समान हैं। हालांकि ईश्वरीय अवतार बहाउल्लाह को आजीवन बंदी के रूप में अक्का भेजा गया था परन्तु उन्होंने उस दुर्ग जैसे नगर को भी नौ वर्षो के बाद छोड़ दिया था। उस समय तक उनके निजी आकर्षण ने आस–पास के सभी लोगों तथा उनके कठोर हृदयी जेलर को ऐसा मित्र बना दिया था कि उनके कारागार छोड़ने पर किसी ने भी कोई आपत्ति नहीं की। बहाउल्लाह ने अपने जीवन का शेष समय अक्का नगर से बाहर रह कर व्यतीत किया।

अपने स्वर्गारोहण के नौ महीने पहले बहाउल्लाह ने इच्छा व्यक्त की थी कि वह इस संसार से विदा लेना चाहते हैं। तब से उनकी बातचीत के ढंग से यह स्पष्ट होता चला गया कि इस धरती पर उनके जीवन के चन्द ही दिन शेष रह गये थे। 8 मई 1892 की रात में उन्हें हल्का ज्वर हुआ। दूसरे दिन बुखार बढ़ा, लेकिन ऐसा लगा कि उतर जायेगा। उन्होंने कुछ मित्रों और तीर्थयात्रियों से मिलना जारी रखा, लेकिन शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि वह स्वस्थ नहीं थे। बुखार फिर चढ़ा, इस बार पहले से ज्यादा था और धीरे–धीरे उनकी हालत खराब होती चली गई। 29 मई 1892 को तड़के सुबह लगभग तीन बजे 75 साल की अवस्था में उनकी आत्मा ने इस संसार से महाप्रयाण किया।

असम में पायनियरों के आह्वान हेतु बैठक

असम में पायनियरों के आह्वान हेतु 8 अप्रैल 2018 को एक बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें तीन सहायक मंडल सदस्य भी उपस्थित रहे। फरवरी माह में दिल्ली में हुई परिषद सचिवों की बैठक में पूरे देश से छः महीने में लगभग सौ पायनीयरों को तैयार करने की वचनबद्धता को पूर्ण करने मई के संदेश का अध्ययन किया और होमफ्रंट तथा अंतर्राष्ट्रीय पायनियरिंग पर सुझाव और अंतर्दृष्टि प्राप्त की। बहाई इतिहास के महान पायनियरों की कहानियाँ साझा की गईं जो सभी के लिए बहुत प्रेरणादायक थीं और कुछ मित्रों ने असम क्षेत्र में अपने पायनीयर जीवन के अनुभवों को



असम में आयोजित बैठक में भाग लेने वाले प्रतिभागी

के परिणामस्वरूप परिषद द्वारा क्षमतावान युवाओं की पहचान की गई और उनको पायनीयर के रूप में सेवा देने के लिए प्रशिक्षण स्वरूप इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस बैठक में लगभग 22 मित्रगणों ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज की और परामर्श में भाग लिया। उन्होंने विश्व न्याय मन्दिर के 23 साझा किया। एक पायनीयर के महत्वपूर्ण गुणों और व्यवहारों के बारे में पवित्र लेखों से पढ़ा और इसके बारे में परामर्श किया गया। अंत में जब परिषद ने चिन्हित क्लस्टरों के लिए पायनियरों का आह्वान किया, तब पाँच मित्रगण जुलाई 2018 के बाद से पायनीयर के रूप में अपनी सेवायें देने के लिए आगे आये।

झारखण्ड में आयोजित गतिविधियाँ

पृष्ठ 1 का शेष

सलाहकार की वित्तीय सहायक तथा सामुदायिक विद्यालय के संयोजक एवं झारखण्ड के 6 क्लस्टरों के 9 समुदायसमूहों से कुल 39 मित्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान मित्रों ने अपने–अपने क्लस्टरों की पिछले एक वर्ष की उपलब्धियों एवं चुनौतियों को साझा किया। इस दौरान मित्रगण विश्व न्याय मंदिर के 29 दिसम्बर 2015 के संदेश के अंश, धर्मसंरक्षक, संविदा, बहाई उपवास का महत्व, सामुदायिक विद्यालय जैसे विषयों से अवगत हुए। इसके अलावा, मित्रों ने कला–कौशल को बढ़ावा देते हुए गीत, संगीत एवं कहानी की भी प्रस्तुति की। योजना के अंशों को ध्यान में रखते हुए मित्रों ने कुल 11 क्लस्टरों की योजना बनाई, जिसमें प्रदेश के 4 क्लस्टरों को आगामी एक वर्ष में विकास के पहले मील के पत्थर से दूसरे मील के पत्थर तक ले जाने की योजना है। छः अन्य क्लस्टर जो विकास के दूसरे मील के पत्थर पर हैं कैसे आगामी एक वर्ष में संख्यात्मक एवं गुणात्मक सघनता प्राप्त करें। अन्य एक क्लस्टर जो विकास के तीसरे मील के पत्थर पर है वो भी कैसे संख्यात्मक एवं गुणात्मक सघनता प्राप्त करे और अपनी सीख को कैसे प्रदेश के अन्य क्लस्टरों तक फैलायें। इन सभी विषयों पर चर्चा की गई।

बहाई विवाह



श्री अली पटेल और सुश्री गीतिका मेहरोत्री का विवाह 24 नवम्बर, 2017 को महाराष्ट्र में बहाई विधिविधान के अनुसार सम्पन्न हुआ।



सुश्री प्रीति बुधवानी और श्री हनीश तेजवानी का विवाह 3 दिसम्बर, 2017 को महाराष्ट्र में बहाई विधिविधान के अनुसार सम्पन्न हुआ।



श्री उमेश मनधरे और सुश्री प्रतीक्षा जोमबडे का विवाह 5 दिसम्बर, 2017 को महाराष्ट्र में बहाई विधिविधान के अनुसार सम्पन्न हुआ।



सुश्री कौशल्या और श्री तुषार पेडनेकर का विवाह 29 दिसम्बर, 2017 को महाराष्ट्र में बहाई विधिविधान के अनुसार सम्पन्न हुआ।

दिल्ली के रोहिणी में आयोजित गतिविधियाँ

दिल्ली के रोहिणी क्षेत्र में कुछ अनुप्रेरकों और स्वयंसेवकों द्वारा बहाई गतिविधियों का संचालन पिछले 6 वर्षों से किया जा रहा है। इन 6 वर्षों के दौरान वहाँ पर बच्चों, किशोरों और युवाओं में विचारों को व्यक्त करने और उन्हें तार्किक रूप से दूसरे के सामने रखने की क्षमता विकसित कर ली है। वे सभी मिलकर समाज की भलाई के लिए कार्य करना चाहता है। इन्होंने अपने प्रयासों के द्वारा



रोहिणी में चल रही गतिविधियों में भाग लेने वाले युवा जो स्टडी सर्कल में रूही पुस्तक–2 का अध्ययन कर रहे हैं

अकथनीय परिवर्तन देखने को मिला है। हाल ही में, वहाँ के 9 युवाओं ने किशोर आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम की सभी पुस्तकों का अध्ययन सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया है और अब वे स्टडी सर्कल में रूही पुस्तक–2 का अध्ययन कर रहे हैं। इन युवाओं ने अपने अपने–अपने घरों में भक्तिपरक बैठकों का आयोजन भी आरम्भ कर दिया है। इसके अलावा, तीन मित्रगण रूही पुस्तक–4 का अध्ययन भी कर रहे हैं। ये सभी मित्रगण प्रभुधर्म के बारे में और अधिक जानने के लिए बहुत उत्सुक हैं।

निवेदन

प्रिय मित्रों,

अपने समुदायसमूह में होने वाली मूल गतिविधियों की रिपोर्ट तथा प्रेरणादायक घटनायें फोटोग्राफ के साथ हमें समय–समय पर भेजते रहें, जिससे की हम उन्हें अपने बहाई समाचारपत्र में प्रकाशित कर सकें।

धन्यवाद !



श्री सुरेन्द्र भारती और सुश्री प्रियंका का विवाह 25 अप्रैल, 2018 को उत्तरप्रदेश के बंथरा क्लस्टर के अंतर्गत आने वाली कुरौनी तथा लखनऊ स्थानीय आध्यात्मिक सभा के तत्वावधान में बहाई विधिविधान के अनुसार सम्पन्न हुआ।

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204 — Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2018-19-20
New Delhi P.S.O. — Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2018-19-20

राष्ट्रीय कार्यालय में सेवा का अवसर

उन मित्रों के आवेदन लिये जा रहे हैं जो राष्ट्रीय बहाई कार्यालय में अपनी सेवायें प्रदान करना चाहते हैं और निम्नलिखित स्थान को भरने के लिए संबद्ध योग्यता और अनुभव रखते हैं :

नियंत्रक (कंट्रोलर)/सहायक नियंत्रक

दायित्व

- राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, परिषदों सहित, कार्यालयों और एजेंसियों की बजट प्रक्रिया को देखना
- राष्ट्रीय सभा के सभी कार्यालयों, विभागों और एजेंसियों के साथ–साथ परिषदों के बजट की नियमित रूप से निगरानी करना।
- जब अनुरोध किया जाए तब राष्ट्रीय सभा के विभिन्न मामलों के लिए सलाहकार के रूप में कार्य करना और सलाह प्रदान करना
- आंतरिक और बाहरी लेखा परीक्षण प्रक्रिया की देखरेख करना
- वित्त मामलों में कानूनी अनुपालन सुनिश्चित करना
- वित्तीय प्रतिबद्धताओं की समीक्षा करना

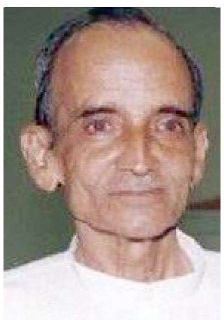
आवश्यकता योग्यता

- व्यक्ति को स्नातक होना चाहिए और लेखा (अकाउटिंग) का ज्ञान होना चाहिए
- व्यक्ति अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं में संवाद करने में समक्ष होना चाहिए
- व्यक्ति को कम्प्यूटर की बुनियादी जानकारी होनी चाहिए और टैली सॉफ्टवेयर का भी ज्ञान होना चाहिए
- व्यक्ति हमेशा सीखने को तत्पर होना चाहिए
- व्यक्ति को इस क्षेत्र में कार्य का पहले से अनुभव है तो यह बहुत अच्छा होगा

इच्छुक व्यक्ति कार्मिक विभाग को personnel@ibnc.in पर लिखें और उसकी एक प्रति nsaindia@ibnc.in पर भी भेजें।

● निधन

श्री नीलकंठ भटवाडेकर



हमें यह बताते हुए अत्यंत खेद हो रहा है कि दापोली, महाराष्ट्र के एक वरिष्ठ बहाई श्री नीलकंठ भटवाडेकर का 2 अप्रैल, 2018 को निधन हो गया। श्री भटवाडेकर दापोली के पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने बहाउल्लाह में अपनी आस्था व्यक्त की थी। उन्होंने प्रभुधर्म के प्रचार और प्रसार के लिए विभिन्न प्रकार से अपनी सेवायें दीं। इस संकट की घड़ी में उनके परिवार के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करते हुए आभा लोक में उनकी आत्मा की प्रगति के लिए प्रार्थनारत हैं।

बाब का घोषणा दिवस

दिव्यात्मा बाब द्वारा अपने अवतरण के उद्देश्य की घोषणा के पहले ही दुनिया भर में अनेक लोगों को यह आभास होने लगा था कि शीघ्र ही प्रतिज्ञापित अवतार प्रकट होगा। ऐसे ही संत–महात्माओं में एक थे सैय्यद काज़िम, जो इराक़ के नगर करबला में रहते थे। सैय्यद काज़िम के अनेक छात्र थे। उन्होंने चिरप्रतीक्षित 'कायम' के लिये खुद को तैयार करने में अपना पूरा जीवन लगा दिया था। वह अक्सर अपने शिष्यों को कहा करते थे कि उनकी मृत्यु के बाद उन्हें घर–बार छोड़ देना चाहिये और सभी भौतिक कामनाओं से अनासक्त हृदय के साथ उस प्रतिज्ञापित परमप्रिय की तलाश में चारों ओर फैल जाना चाहिये।

सैय्यद काज़िम की मृत्यु के बाद उनके एक अति विशिष्ट शिष्य, मुल्ला हुसैन एक मस्जिद में गये और वहाँ उन्होंने प्रार्थना तथा ध्यान में चालीस दिन बिताये। इस दौरान ईश्वर की प्रेरणा पाने के लिये उनके हृदय के दरवाजे खुले। प्रार्थना और ध्यान के चालीस दिन पूरे कर लेने के बाद वह अपने दो साथियों के साथ प्रतिज्ञापित अवतार की तलाश में इराक चल पड़े। पहले वह बुशहिर गये, लेकिन वह वहाँ बहुत दिनों तक नहीं रहे, क्योंकि उन्हें बराबर ऐसा लगता रहा कि उत्तर दिशा की ओर कुछ उन्हें खींच रहा है और शीघ्र ही वह शीराज़ के लिये चल पड़े। नगर के प्रवेश–द्वार पर आकर उन्होंने अपने दो साथियों को सीधे मस्जिद जाने का निर्देश दिया और कहा कि जब तक वह वहाँ नहीं पहुँचें, वे दोनों मस्जिद में ही रहें।

उसी दिन सूर्यास्त के कुछ ही घंटे पहले जब वह नगर के द्वार के बाहर चहलकदमी कर रहे थे तब उनकी मुलाकात एक युवक से हुई, जिन्होंने उन्हें अपने घर आमंत्रित किया ताकि वह कठिन यात्रा की थकान मिटाने के लिये हाथ–मुँह धो सकें। मुल्ला हुसैन उस असाधारण युवा के विनम्र और अत्यन्त आकर्षक भाव से प्रभावित हुए और जैसे उनके पीछे–पीछे खिचे चले गये। शीघ्र ही वे एक शालीन घर के दरवाजे पर पहुँचे। वे घर के अन्दर गये और ऊपर के एक कमरे में बैठे। उस सौम्य मेजबान ने पानी का एक जग लाने को कहा ताकि उनके घर पर आये मेहमान यात्रा के दौरान पड़ी धूल–गर्द को धो सकें। उसके बाद उन्होंने खुद चाय बनायी और मुल्ला हुसैन को दी। आतिथ्य–सत्कार के बाद वह अपने मेहमान से बातें करने लगे।

जिस रात बाब ने मुल्ला हुसैन के सामने अपने प्रतीक्षित क़ायम होने के स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत किये, उसी रात उन्होंने एक निश्चित प्रवाह में क़ुरान के उस महत्वपूर्ण अध्याय–सूरा–ए–जोसफ की अपनी व्याख्या का पहला भाग प्रकट किया।

इस गौरवशाली प्रकटीकरण से मुल्ला हुसैन की आत्मा उल्लास और आनन्द से भर उठी, वह अचम्भित और भौचक्के रह गये : "पहले मैंने अपने आपको कितना अशक्त और असमर्थ, कितना उदास और कायर महसूस किया था। न तो मैं कुछ लिख सकता था और न ही ठीक से चल–फिर सकता था, मेरे हाथ–पाँव इतने काँपते थे। नवधर्म की घोषणा सुनकर मैं एक बार फिर एक नई शक्ति से संचालित हो उठा। अब इतने साहस और शक्ति से सम्पन्न मैंने अपने आप को महसूस करना शुरू कर दिया कि अगर पूरी–की–पूरी दुनिया, दुनिया के सभी लोग और शूरवीर भी मेरे विरुद्ध उठ खड़े हों तो बिल्कुल अकेला, निर्भीक होकर मैं उनके प्रहारों का सामना कर सकता था। पूरी दुनिया अब मुझे मुठ्ठी भर धूल के समान लगने लगी थी। मैंने महसूस किया कि मैं ग्रैबेल की उस आवाज में तब्दील हो गया हूँ, जो समस्त मानवजाति को गुहार लगाकर कह रही हो – ***"जाग जाओ, देखो, नवप्रभात की किरणें फैल चुकी हैं। उठ खड़े हो, क्योंकि प्रभु का नवधर्म प्रकट हो चुका है। उसके अनुग्रह के द्वार खुल चुके हैं। ऐ संसार के लोगों ! इस द्वार से प्रवेश करो क्योंकि तुम्हारा प्रतीक्षित अवतार आ चुका है।"***

बाब का महान उद्घोष 23 मई 1844 की शाम को हुआ। वह तब पच्चीस साल के थे।

कुल पृष्ठ संख्या–4 — बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2018-19-20
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2018-19-20
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110020
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at CPSO New Delhi on 10/11.5. 2018
Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg.
New Delhi - 110 001 - INDIA

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा
श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कुमार)